सितम्बर: 2024

वर्ष : 7 अंक : 12

# सिफरी मासिक समाचार

# नील क्रांति की ओर अग्रसर

## निदेशक की कलम से

"हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।"

डॉ. अमरनाथ झा

सर्वप्रथम आप सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...

14 सितंबर का दिन हम सभी भारतीयों के लिए बेहद गौरवमयी दिन है स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत का संविधान तैयार करने के लिए संविधान का गठन हुआ। लेकिन भारत की कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी, ये एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया और तब हिंदी और अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में चुना गया। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी और हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला। तब से हर साल इस दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारी वर्तमान सरकार का कदम सराहनीय है। आज देश के नेता विदेशों में जाकर भी हिंदी में वक्तव्य को महत्ता दे रहे हैं। ऐसा इसिलए किया जा रहा है ताकि भारत के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा के महत्व को स्थापित किया जाए। यह हमारी सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है तो हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

प्रस्तुत सितंबर 2024 अंक में संस्थान में हुये अगस्त माह के कार्यकलापों का विवरण दिया गया है। इस महीने संस्थान में दिनांक 15 अगस्त 2024 को आजादी का अमृत काल मनाया जा रहा है।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

## दो दशकों के बाद सिफरी द्वारा पुलिकट झील मत्स्य पालन का पुनर्मूल्यांकन

आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की सीमा पर कोरोमंडल तट पर स्थित पुलिकट झील, चिल्का के बाद देश की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी

की झील है। यह झील न केवल एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है बल्कि मत्स्य पालन और जैव विविधता के केंद्र के रूप में भी कार्य करती है। झील का खारे पानी का पारिस्थितिकी तंत्र, नमक और मीठे पानी को मिलाकर, समुद्री और मुलेट, झींगा, केकड़े, कैटफ़िश आदि सहित मुलेट दोनों प्रकार की मछलियों के लिए एक अनूठा आवास प्रदान करता है। झील का मत्स्य पालन हजारों मछुआरों और समुद्री खाद्य प्रसंस्करण और विपणन जैसे सहायक क्षेत्रों की आजीविका का समर्थन करता है। पुलिकट झील से मछलियाँ स्थानीय बाजारों में बेची जाती हैं और शहरी क्षेत्रों में भेजी जाती हैं जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। पुलिकट झील मत्स्य पालन की स्थिति की समीक्षा करने के लिए सिफरी , बैरकपुर की एक वैज्ञानिक टीम ने 2-8 अगस्त, 2024 के

दौरान तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के हिस्सों में झील के विभिन्न स्थानों पर नमूना संग्रह किया। टीम ने पाया कि मछुआरे नावों, जालों और पारंपरिक जालों का इस्तेमाल कर रहे हैं जो लैगून के उथले और अक्सर गंदे पानी के लिए उपयुक्त हैं। हालाँकि, व्यापक मछली पकड़ने से झील में मछली की आबादी की स्थिरता के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं। अत्यधिक मछली पकड़ने से प्रजातियाँ कम हो सकती हैं और लैगून का जैविक संतुलन

कमज़ोर हो सकता है। इसके अलावा, पुलिकट झील का पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता अतिक्रमण, गाद, मैंग्रोव क्षरण और औद्योगिक अपशिष्टों, कृषि अपवाह और घरेलू कचरे से होने वाले प्रदूषण के कारण खतरे में है। जिला मत्स्य अधिकारियों के अनुसार, मछली पकड़ने की स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने, मछली पकड़ने की गतिविधियों का प्रबंधन करने और महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के लिए उपाय लागू किए जा रहे हैं। पर्यावरण संगठन और सरकारी एजेंसियाँ प्रदूषण के स्तर की निगरानी करने और झील के पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बहाल करने के उद्देश्य से संरक्षण कार्यक्रम चलाने के लिए मिलकर काम कर रही हैं। झील का प्रशासन और संरक्षण स्थानीय समुदायों पर बहुत अधिक निर्भर करता है। इस प्रकार शिक्षा, सहकारी समितियों और सहभागी प्रबंधन विधियों के माध्यम से मछुआरों को सशक्त बनाना संसाधन के संरक्षण और सतत उपयोग में मदद करेगा। संसाधन संरक्षण के साथ समुदाय की आजीविका की जरूरतों को संतुलित करना इस मूल्यवान संसाधन की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। डॉ. संजय के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. दिवाकर भक्त, वैज्ञानिक और श्री रिकेश सरकार, तकनीकी अधिकारी ने सर्वेक्षण किया, जबकि डॉ. बसंत के. दास, आईसीएआर-सिफरीके निदेशक ने निरीक्षण किया।

# 78वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 15 अगस्त 2024 को 78वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। आजादी का अमृत काल के तहत 9 से 15 अगस्त तक संस्थान मुख्यालय बैरकपुर, कोलकाता और क्षेत्रीय केंद्रों गुवाहाटी, प्रयागराज, बेंगलुरु और वडोदरा में हर घर तिरंगा अभियान चलाया गया। सिफरीआवासीय क्वार्टर से संस्थान के मुख्य भवन तक सुरक्षा कर्मचारियों के सदस्यों द्वारा मार्च पास्ट के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस अवसर पर निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने संस्थान में आयोजित भव्य कार्यक्रम में राष्ट्रीय तिरंगा फहराया। अधिकारी, कर्मचारी, शोध छात्र और संविदा कर्मचारी अपने परिवार

के सदस्यों और बैरकपुर के स्थानीय लोगों के साथ ध्वजारोहण समारोह में शामिल हुए। निदेशक, सिफरीने अपने संबोधन में भारतीय स्वतंत्रता की 78वीं वर्षगांठ के अवसर पर संस्थान परिवार के सभी सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे अपने 100 दिवसीय लक्ष्य को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करें तथा माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री एवं महानिदेशक द्वारा निर्धारित एक पेटेंट/एक उत्पाद/उच्च प्रभाव कारक पत्रिकाओं में प्रकाशन के लक्ष्य को भी पूरा करें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत के विभिन्न राज्यों में एस.सी.एस.पी. एवं टी.एस.पी. के माध्यम से मछुआरा समुदायों की आजीविका में सुधार के लिए सी.आई.एफ.आर.आई. द्वारा किए गए प्रयासों के महत्वपूर्ण परिणाम सामने आए हैं। निदेशक ने सभी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे एकजुट होकर कार्य करें तथा माननीय प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप देश को विकसित भारत बनाने में अपना योगदान दें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस वर्ष आईसीएआर ने 16 जुलाई 2024 को नई दिल्ली में आईसीएआर-स्थापना दिवस के अवसर पर आईसीएआर-सिफरीकी सात प्रौद्योगिकियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। सिफरीमछली तनावड़ी का एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के माध्यम से व्यावसायीकरण किया गया है। संस्थान को पिछले एक साल में एक पेटेंट, 11 कॉपीराइट, 3 ट्रेडमार्क का अनुदान प्राप्त हुआ है। संस्थान ने पिछले एक साल में चार पेटेंट, ग्यारह कॉपीराइट और तीन ट्रेडमार्क दायर किए हैं। उन्होंने सभी सीआईएफआरआईएएनएस से आईसीएआर-सिफरीऔर राष्ट्रीय निर्माण की अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए 100% योगदान देने को कहा। संस्थान ने 9-15 अगस्त 2024 तक मुख्यालय, बैरकपुर कोलकाता और इसके क्षेत्रीय केंद्रों पर हर घर तिरंगा अभियान मनाया।

# डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) ने आईसीएआर-सिफरीका दौरा

डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक, ने 16 अगस्त 2024 को आईसीएआर-सिफरी, मुख्यालय, बैरकपुर का दौरा किया। सिफरीको अपने मुख्यालय, बैरकपुर में, माननीय डीडीजी (मत्स्य विज्ञान) डॉ. जे.के. जेना के हाथों प्रशासनिक भवन से सटे प्रयोगशाला भवन की आधारशिला रखने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने संस्थान के मुख्य भवन के 'ब्लॉक ए' के सामने 'सेल्फी प्वाइंट' का पर्दा भी खोला और राष्ट्र को समर्पित प्रदूषकों के विश्लेषण के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण जीसी-एमएस/एमएस की नई सुविधा का भी उद्घाटन किया। डॉ. जेना ने ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और सीएफसी गैसों के विश्लेषण के लिए समर्पित वाद्य सुविधाओं का भी उद्घाटन किया। इसके बाद स्टाफ मीटिंग का आयोजन किया गया। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों और विद्वानों को संबोधित किया। कर्मचारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने सभी से इस प्राचीन प्रसिद्ध संस्थान की विरासत और गौरव को बनाए रखने का आग्रह किया जिसने न केवल

आईसीएआर से सर्वश्रेष्ठ संस्थान का पुरस्कार प्राप्त करके एक नई ऊंचाई प्राप्त की है बल्कि भारत के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र में एकजुटता विकसित की है और भारत को वैश्विक स्तर पर अन्तर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन में अग्रणी बनाया है। डॉ. जेना ने संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास को उच्च प्रभाव कारकों वाले प्रकाशनों सहित सर्वांगीण उत्कृष्ट अनुसंधान और तकनीकी नवाचारों में संस्थान को इसकी वर्तमान स्थिति में लाने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए अपना आशीर्वाद दिया। यह वास्तव में सिफरीके लिए एक उल्लेखनीय क्षण है, जो रिचार्ज और ऊर्जा से भरपूर है, जो आने वाले दिनों में संस्थान के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

## डॉ. जे. के. जेना, डीडीजी (मत्स्य विज्ञान) द्वारा कुलतली सुंदरबन में 'महिला मत्स्यजीवी सम्मेलन 2.0' में महिला सशक्तिकरण पहल का उद्घाटन

सुंदरबन, मैंग्रोव वनों और जलमार्गों का एक विस्तृत क्षेत्र है, जो बांग्लादेश के दक्षिणी भाग और भारत के पूर्वी भाग में फैला हुआ है। भारतीय सुंदरबन, विशेष रूप से इन प्राकृतिक आपदाओं से अक्सर खतरों का सामना करता है जिससे स्थानीय लोगों को अनुकूलन करने और आजीविका के स्थायी साधन खोजने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इस क्षेत्र में प्राथमिक व्यवसायों में से एक मत्स्य पालन है जो कई परिवारों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करता है। सुंदरबन में महिलाएँ मत्स्य पालन क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जो अक्सर अपने परिवारों का भरण-पोषण करने के लिए छोटे पैमाने पर जलीय कृषि में संलग्न होती हैं। अपने महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद इन महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें संसाधनों तक सीमित पहुँच, औपचारिक प्रशिक्षण की कमी और प्राकृतिक आपदाओं का लगातार खतरा शामिल है। कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियाँ, सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के साथ मिलकर महिला मछुआरों के लिए अपनी आजीविका को बनाए रखना और आर्थिक स्थिरता प्राप्त करना भी मुश्किल बना देती हैं। आईसीएआर-सिफरीने मछली पालन के लिए व्यापक सहायता प्रदान करके सुंदरबन में महिला लाभार्थियों की आजीविका में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से, महिलाओं को स्थायी जलीय कृषि प्रथाओं

के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस किया गया है। 2023 के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम, "समानता और सशक्तिकरण में तेजी लाना" के अनुरूप, आईसीएआर-सिफरी ने "मिशन 3000" शुरू किया, जिसका उद्देश्य विभिन्न योजनाओं के तहत भारत भर में 3,000 महिलाओं को गोद लेना है ताकि उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके। इस मिशन के हिस्से के रूप में, कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के सहयोग से 19 मई, 2023 को कुलतली, बसंती सुंदरवन, पश्चिम बंगाल में पहला महिला मत्स्य सम्मेलन (महिला मछुआरे मिलन) आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य कमजोर समुदायों की 500 महिलाओं को मत्स्य पालन इनपुट प्रदान करके आय के वैकल्पिक स्रोत उत्पन्न करना था, जिसका उद्घाटन भारत सरकार के कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग के सचिव और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ हिमांशु पाठक ने किया। इस वर्ष, 17 अगस्त 2024 को, आईसीएआर-सिफरी ने NFDB, हैदराबाद और NAAS क्षेत्रीय अध्याय, कोलकाता के सहयोग से महिला

मत्स्यजीवी सम्मेलन 2.0 का आयोजन किया है। इसकी अध्यक्षता आईसीएआर, नई दिल्ली के डीडीजी (मत्स्य विज्ञान) डॉ जे. के. जेना ने की। उन्होंने यह भी बताया कि यह उनकी वैकल्पिक आजीविका के लिए एक व्यवहार्य विकल्प हो सकता है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि आईसीएआर महिला मछुआरों की क्षमता का विकास करेगा ताकि वे छोटे पैमाने पर मत्स्य पालन में अपना ज्ञान और कौशल विकसित कर सकें जो उनकी आजीविका को बेहतर बनाने में मदद करेगा। डॉ प्रदीप डे, निदेशक अटारी भी 'महिला मत्स्यजीवी सम्मेलन 2.0' में मौजूद थे और उन्होंने इस पहल की प्रशंसा की। श्री सिद्धार्थ शंकर दाश, डीजीएम (एबीयू और जीएसएस), एसबीआई, कोलकाता ने भी महिला किसान सम्मेलन में भाग लिया और उपलब्ध योजनाओं पर एक वार्ता दी जो मछुआरे महिलाओं को ऋण सुविधाओं तक पहुंचने में मदद कर सकती हैं। कार्यक्रम की शुरुआत सिफरी के निदेशक डॉ बी के दास के स्वागत भाषण से हुई और 11 जीपी, गोसाबा और बसंती ब्लॉक, सुंदरवन के 50 गांवों से 500 चयनित महिला लाभार्थियों को इनपुट वितरण के साथ समाप्त हुआ। प्रत्येक लाभार्थी को 100 किलो सिफरी केज ग्रो फीड और 6 किलो मछली के बीज दिए गए।

कार्यक्रम का उद्देश्य महिला मछुआरों को अपनी आजीविका बनाए रखने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान देने के लिए सशक्त बनाना है। यह पहल सुंदरबन की महिला मछुआरों की आशा, लचीलापन और साहस और दृढ़ संकल्प के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों से ऊपर उठने की अटूट भावना को मूर्त रूप देगी।

# बैंगलोर केंद्र ने बाणासुरसागर जलाशय में पिंजरों में पर्ल स्पॉट मछली के बीज का जमाव और मछली फीड का वितरण

29 अगस्त, 2024 आईसीएआर-सिफरी, क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 29 अगस्त 2024 को मछली उत्पादन बढ़ाने में पिंजरे पालन की भूमिका के बारे में मछुआरों को जागरूक करने के लिए "बढ़ी हुई मछली उत्पादन के लिए जलाशयों में मछलियों की पिंजरे में पालन" पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में बाणासुरसागर एसटी-एससी मछुआरा सहकारी समिति के लगभग 50 आदिवासी मछुआरे शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक किया गया। क्षेत्रीय केंद्र की प्रमुख डॉ. प्रीता पणिक्कर ने अध्यक्षीय टिप्पणी दी और अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास में आईसीएआर-सिफरी की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, उत्तरी क्षेत्र, केरल के मत्स्य पालन के संयुक्त निदेशक, श्री बी. के. सुधीर किशन ने राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए सहकारी समितियों की भूमिका पर बात की। केरल राज्य विद्युत बोर्ड, केरल के सहायक कार्यकारी अभियंता श्री कृष्णन और सहायक अभियंता श्री अनिल ने प्रतिभागियों को संबोधित किया और उनकी विभिन्न जिज्ञासाओं पर सक्रिय रूप से बातचीत की। आईसीएआर-सिफरी की वैज्ञानिक सुश्री जेसना पी. के. ने जलाशयों में पिंजरे की संभावनाओं के बारे में विस्तार से बताया। सुश्री अखिशा, तकनीकी अधिकारी, जलीय कृषि विकास प्राधिकरण, केरल, मत्स्य विभाग, केरल सरकार के अधिकारी और सहकारी समिति के पदाधिकारी कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. प्रीता पणिक्कर, सुश्री जेसना पी. के. ने किया और डॉ. विजयकुमार, एम. ई., और डॉ. वी.एल. राम्या, वैज्ञानिक द्वारा सह-समन्वय किया गया।

# झारखंड के आदिवासी मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए स्कैम्पी मत्स्य पालन

आईसीएआर-सिफरी ने डीओएफ, झारखंड के सक्रिय सहयोग और वित्त पोषण सहायता से केलाघाघ जलाशय, सिमडेगा, झारखंड में मछली पकड़ने वाले आदिवासी मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में मदद की है। इसके लिए 27 अगस्त, 2024 को 4 लाख स्कैम्पी बीजों का भंडारण किया गया, जिसमें चार एफसीएस के तहत केलाघाघ जलाशय के लगभग 40 मछुआरों ने भारी बारिश के बीच भंडारण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। डीओएफ, झारखंड के निदेशक डॉ एच. एन. द्विवेदी ने श्रीमती सीमा टोप्पो, डीएफओ, सिमडेगा के साथ जलाशय की मुख्य खाड़ी में स्थापित एक फ्लोटिंग पेन के उद्घाटन के साथ इस कार्यक्रम में प्रमुख भूमिका निभाई, जहां स्कैम्पी के बीज छोड़े गए, जिन्हें किसी भी अवांछित शिकारी मछलियों से बचाया जा रहा है, जिन्हें फ्लोटिंग पेन स्थापित करने के तुरंत बाद ही पकड़ लिया गया था। पूरे कार्यक्रम को झारखंड के स्कैम्पी परियोजना के निजी सचिव और प्रमुख अन्वेषक डॉ. ए. के. दास और आईसीएआर-सिफरी की उनकी टीम द्वारा संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के कुशल मार्गदर्शन में अच्छी तरह से समन्वित किया गया जो सितंबर 2023 से झारखंड के हजारीबाग जिले के गुमला में मसरिया, सिमडेगा में केलाघाघ और घाघरा जलाशय जैसे तीन जलाशयों में मत्स्य विभाग, झारखंड द्वारा वित्त पोषित स्कैम्पी मत्स्य संवर्धन परियोजना के कार्यान्वयन के संरक्षक हैं, जिसका लक्ष्य उक्त जलाशयों के आसपास रहने वाले झारखंड के आदिवासी मछुआरों की बेहतर आजीविका और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

## "जलीय स्वास्थ्य प्रबंधन में प्रगति " पर आईसीएआर के मत्स्य अनुसंधान संस्थानों के तकनीकी अधिकारियों का मानव संसाधन विकास

मछली और शैल मछलियों की बीमारियों से मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र को काफी आर्थिक नुकसान होता है। देश के

आईसीएआर मत्स्य अनुसंधान संस्थान और मत्स्य विश्वविद्यालय नैदानिक, निवारक और चिकित्सीय नियंत्रण उपायों को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास और संसाधन लगा रहे हैं। देश के विभिन्न मत्स्य अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों में कार्यरत तकनीकी अधिकारियों की क्षमता निर्माण के लिए आईसीएआर-सिफरी ने 26-30 अगस्त 2024 के दौरान बैरकपुर स्थित अपने मुख्यालय में "जलीय स्वास्थ्य प्रबंधन में प्रगति" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किया, जिन्होंने रोग निदान और जलीय स्वास्थ्य निर्धारण में तकनीकी अधिकारियों के ज्ञान और कौशल में सुधार पर जोर दिया। पांच दिवसीय कार्यक्रम में आईसीएआर-सिफरी, आईसीएआर -एनबीएफजीआर, ओयूएटी और आईसीएआर-सीआईएफई के कुल 30 तकनीकी अधिकारियों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया।

## ओडिशा के अधिकारियों लिए 'रोग निदान और प्रयोगशाला परीक्षण प्रशिक्षण' का आयोजन

ओडिशा में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न

पहलुओं को संबोधित करता हो। ओडिशा, अपने विशाल समुद्र तट, नदियों, झीलों और तालाबों के साथ, मछली उत्पादन बढ़ाने की महत्वपूर्ण क्षमता रखता है। ओडिशा सरकार अन्तर्स्थलीय और खारे पानी दोनों क्षेत्रों से मछली उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ मछुआरों की आय में सुधार करने पर भी जोर दे रही है। इसके लिए मछली किसानों और मछुआरों को प्रशिक्षण और

तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए विस्तार सेवाओं को मजबूत करना महत्वपूर्ण है। इसमें मत्स्य अधिकारियों की क्षमता निर्माण भी शामिल है जो किसानों को तकनीकी जानकारी प्रदान करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, ओडिशा के 27 जिलों वाले 30 अधिकारियों के लिए 28-30 अगस्त, 24 तक आईसीएआर-

सिफरी मुख्यालय में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (डीओएफ, ओडिशा प्रायोजित) आयोजित किया गया था। प्रशिक्षु अधिकारियों के क्षमता निर्माण के लिए कुल पांच कक्षा सत्र, तीन व्यावहारिक सत्र, एक प्रदर्शन सत्र और एक क्षेत्र प्रदर्शन दौरा आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में, सिफरी के निदेशक डॉ बि. के. दास ने युवा अधिकारियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास की आवश्यकता पर बल दिया ताकि वे संबंधित राज्य के मछुआरों की आजीविका में सुधार में योगदान दे सकें। उद्घाटन के बाद, एक प्रयोगशाला का दौरा किया गया। कक्षा सत्र में, अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता विश्लेषण का महत्व, सामान्य मछली रोग, मछली रोग निदान विधि, बाड़े में मछली रोग प्रबंधन आदि जैसे विषयों को कवर किया गया। पूर्वी कोलकाता वेटलैंड का एक क्षेत्र दौरा किया गया और वहां एक ऑन-फील्ड व्यावहारिक सत्र भी आयोजित किया गया।

अधिकारियों ने सीआईएफई कोलकाता केंद्र का भी दौरा किया। फीडबैक सत्र में, 92% प्रशिक्षुओं ने व्यक्त किया कि वे अत्यधिक संतुष्ट हैं प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अपर्णा रॉय और डॉ. विकाश कुमार द्वारा श्री सुजीत चौधरी, डॉ. अविषेक साहा, श्री असीम जाना और श्री मनबेंद्र रॉय के सहयोग से किया गया।

## खुले जल में मछली उत्पादन और कोराकल पर जागरूकता कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में 03 सितंबर 2024 को तमिलनाडु के कृष्णागिरी जलाशय में "खुले जल में मछली उत्पादन बढ़ाने" पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत आयोजित किया गया था और दो महिला लाभार्थियों सहित पांच आदिवासी मछुआरों को कोराकल वितरित किए गए थे। कार्यक्रम में कृष्णागिरी जिले के 50 मछुआरों ने भाग लिया। वैज्ञानिक डॉ. वी. एल. राम्या ने सभा का स्वागत किया और अन्तर्स्थलीय जल में मत्स्य पालन बढ़ाने के बारे में बताया। क्षेत्रीय केंद्र की प्रमुख डॉ. प्रीता पणिक्कर ने परिचयात्मक टिप्पणियां प्रस्तुत की और मछुआरों की आजीविका को बनाए

रखने में जलाशय मत्स्य पालन की भूमिका पर जोर दिया। इस अवसर पर तमिलनाडु के मत्स्य विभाग के उप निदेशक श्री सी. सुब्रमणि मुख्य अतिथि थे। वैज्ञानिक सुश्री जेसना पी. के. ने पिंजरे में मछली प्रजातियों के विविधीकरण पर बात की। मत्स्य विभाग के सहायक निदेशक श्री के. रथिनम और मत्स्य विभाग के मत्स्य निरीक्षक श्री आर. कथिरवेल ने मछुआरों के लिए विभाग में उपलब्ध विभिन्न योजनाओं पर बात की। सत्र के दौरान मछुआरों ने सक्रिय रूप से बातचीत की। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. प्रीता पणिक्कर, डॉ. वी. एल. राम्या और सुश्री जेसना पी. के. ने किया।

# मछली रोग निगरानी पर जागरूकता

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलिय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) द्वारा वित्त पोषित एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के तहत एक दिवसीय मछली रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया है। इसके अतिरिक्त, हितधारकों को एक राष्ट्रीय अभियान के तहत प्लांट 4 मदर के बारे में जागरूक किया गया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास के विशेषज्ञ मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम 29 अगस्त 2024 को पश्चिम बंगाल के ईस्ट कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू) में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में 30 सहायक मत्स्य अधिकारी, ओडिशा सरकार और ईकेडब्ल्यू के 15 मछुआरों ने भाग लिया, जिसमें रोग निगरानी, स्वास्थ्य प्रबंधन, रोगाणुरोधी प्रतिरोध मुद्दे, मछली रोग प्रबंधन, जलीय कृषि विकास के लिए टिकाऊ दृष्टिकोण और अन्य कई विषयों को शामिल किया गया। एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के टीम सदस्यों ने भी सभा को संबोधित किया, जिसमें मछली स्वास्थ्य और कीमोथेरेप्यूटिक प्रबंधन तथा मछली में इस्तेमाल किए जाने वाले एंटीबायोटिक्स और रसायनों के नकारात्मक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित किया गया। टीम ने जल गुणवत्ता के महत्व और रोग विकास और प्रकोप के नैदानिक लक्षणों के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए संवर्धित सुविधाओं का भी दौरा किया। बाद में, प्लांट 4 मदर पर एक राष्ट्रीय अभियान के तहत, आम, अमरूद आदि के 12 विभिन्न पौधे वितरित किए गए और आर्द्रभूमि क्षेत्र में लगाए गए।

## मुख्य शोध उपलब्धियां

- उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, और पश्चिम बंगाल के सोलह मछली पकड़ने वाले स्थलों से गंगा नदी से जुलाई 2024 के महीने में कुल मछली पकड़ने का अनुमान 137.66 टन दर्ज किया गया। जुलाई 2024 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली पकड़ने का अनुमान 21.67 टन था जो जुलाई 2023 से 3% मछली पकड़ने की संख्या में वृद्धि है।
- नर्मदा नदी का सीपीयूई, उद्गम से लेकर समुद्र के मुहाने तक 0.25 और 7.5 किलोग्राम/मछुआरा/दिन के बीच बदलता रहता है। रीता गोगरा, क्लूपिसोमा गरुआ, टोर पुटिटोरा, टोर टोर, सिस्टोमस सरना, लैबियो डायोचेलस, लैबियो बोगट, मास्टेसमबेलस आर्मेटस, चन्ना मारुलियस, सिरहिनस मृगला, पुंटियस सोफोर, साइप्रिनस कार्पियो नर्मदा नदी की पकड़ में प्रमुख प्रजातियाँ थीं।
- झारखंड के रामगढ़ जिले में भैरवी नामक एक छोटे जलाशय का अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण किया गया जो तिलापिया, पंगास, ग्रास कार्प, सिल्वर कार्प, बिगहेड कार्प और कॉमन कार्प जैसी विदेशी प्रजातियों से भरा हुआ है, तथा यहाँ 50% से अधिक मछलियाँ पकड़ी गई हैं।
- 'राष्ट्रीय रैंचिंग मिशन-III' के अंतर्गत छह नदी पशुपालन कार्यक्रमों के अंतर्गत भारतीय मेजर कार्प के 17.50 लाख फिंगरलिंग और 0.50 लाख संकटग्रस्त चिताला मछलियाँ छोड़ी गईं।

## बैठक

- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक और वैज्ञानिक ने वैश्विक ध्यान आकर्षित करने और सही जलीय कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए 24-26 जुलाई 2024 को समयन मित्राउन हॉल बैंकॉक थाईलैंड में आयोजित "जलीय कृषि स्थिरता (एक्वासस्टेन 2024) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया, जिसका आयोजन चूललोंगकोर्न विश्वविद्यालय, थाईलैंड द्वारा किया गया था।
- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक ने 13 अगस्त 2024 को राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद में अभिनव परियोजनाओं/ प्रौद्योगिकी पर चर्चा में भाग लिया और अभिनव परियोजनाओं पर प्रस्ताव प्रस्तुत किए।
- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक ने 19 अगस्त 2024 को आईसीएआर-केंद्रीय जूट और संबद्ध फाइबर अनुसंधान संस्थान (सीआरआईजेएएफ), बैरकपुर, कोलकाता में प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान और मूल्यांकन परिषद (टीआईएफएसी) के सहयोग से आयोजित "कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए प्रौद्योगिकी प्राथमिकता कार्यशाला" में भाग लिया।
- 15 अगस्त 2024 को आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर और इसके सभी क्षेत्रीय केंद्रों में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर निदेशक डॉ. बी. के. दास ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और स्वतंत्रता दिवस पर भाषण दिया। कार्यक्रम में 700 से अधिक लोगों ने भाग लिया।
- आईसीएआर के डीडीजी (मत्स्य विज्ञान) डॉ. जे.के. जेना ने 16 अगस्त, 24 को संस्थान का दौरा किया और प्रशासनिक भवन से सटे एक प्रयोगशाला भवन की आधारशिला रखी। उन्होंने संस्थान के 'ब्लॉक ए' के सामने 'सेल्फी प्वाइंट' का उद्घाटन किया। इस दिन प्रदूषकों के विश्लेषण के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण जीसी-एमएस/एमएस की नई सुविधा राष्ट्र को समर्पित की गई।
- आईसीएआर-सिफरी ने 25-27 जुलाई 2024 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर तीन दिवसीय अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें मत्स्य विभाग, छत्तीसगढ़ के 10 मत्स्य अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज में 31 जुलाई से 2 अगस्त 2024 तक "जैविक डेटा विश्लेषण के लिए बुनियादी सांख्यिकी में अवधारणा निर्माण" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 23 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 18 जुलाई 2024 को मत्स्य विभाग, ओडिशा के 42 मत्स्य अधिकारियों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें उन्हें विभिन्न मत्स्य प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया और सजावटी इकाई, हैचरी इकाई और बायोफ्लोक इकाई के साथ-साथ संस्थान की प्रयोगशालाओं जैसी विभिन्न सुविधाओं से अवगत कराया गया। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज,

कोलकाता के बीएससी जूलॉजी (ऑनर्स) के दूसरे सेमेस्टर के छात्रों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं के साथ-साथ सिफरी की सजावटी मछली पालन इकाई का दौरा किया।

## अन्य कार्यक्रम

- आईसीएआर-सिफरी ने महीने के दौरान गंगा नदी के विभिन्न क्षेत्रों में कुल 13 डॉल्फिन, हिल्सा और मछली जैव विविधता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। स्थानीय लोगों, मछुआरों और स्कूली छात्रों सहित 465 व्यक्तियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई।
- 4 अगस्त, 2024 को हुगली के बालागढ़ में गंगा नदी के स्वदेशी बेशकीमती आईएमसी की बहाली के लिए नदी के जर्मप्लाज्म का उपयोग करके भारतीय मेजर कार्प्स (लैबियो रोहिता, लैबियो कैटला, सिरहिनस मृगला) के प्रेरित प्रजनन कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 76 लाख स्पॉन का उत्पादन किया गया। प्रजनन गतिविधि के दौरान निषेचन दर 82% देखी गई, जबकि हैचिंग दर 76% थी।
- फरक्का अपस्ट्रीम में कुल 238 हिल्सा मछलियों का पालन किया गया और प्रवासी पथ को समझने के लिए 12 को टैग किया गया। पालन के दौरान हिल्सा का दर्ज वजन 55.1 ग्राम (न्यूनतम) से 254.4 ग्राम (अधिकतम) देखा गया।
- कॉपीराइट प्रमाणपत्र संख्या के साथ कॉपीराइट आवेदन को पंजीकरण प्रदान किया गया। एल-152231/2024 मयूरभंज में अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास।
- कॉपीराइट आवेदन को कॉपीराइट पंजीकरण संख्या एल-143399/2024 के साथ पंजीकरण प्रदान किया गया साहित्यिक कार्य: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नाम से "वेटलैंड्स से सफलता की कहानियां" शीर्षक।

## प्रशिक्षण

- 17 जुलाई 2024 को कुलटोली, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में कुलटोली मिलनतीर्थ सोसाइटी के साथ संयुक्त रूप से दूसरा महिला मत्स्यजीवी सम्मेलन आयोजित किया गया। एससीएसपी के तहत आजीविका संवर्धन कार्यक्रम के तहत 500 महिला मछुआरों को गोद लिया गया तथा उन्हें पिछवाड़े तालाब में मछली पालन के लिए मछली के बच्चे और मछली आहार वितरित किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 25-27 जुलाई 2024 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर तीन दिवसीय अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें मत्स्य विभाग, छत्तीसगढ़ के 10 मत्स्य अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 18 जुलाई 2024 को मत्स्य विभाग, ओडिशा के 42 मत्स्य अधिकारियों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें उन्हें विभिन्न मत्स्य प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया और सजावटी इकाई, हैचरी इकाई और बायोफ्लोक इकाई के साथ-साथ संस्थान की प्रयोगशालाओं जैसी विभिन्न सुविधाओं से अवगत कराया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 9 अगस्त 2024 को डीओएफ, ओडिशा के तहत जेएफटीए और एसएफटीए के 40 सदस्यों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जिसमें उन्हें सजावटी इकाई, हैचरी यूनिट और बायो फ्लोक यूनिट के साथ-साथ संस्थान की प्रयोगशालाओं जैसी विभिन्न सुविधाओं का अनुभव कराया गया।

**प्रकाशन मंडल**

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

**भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,**(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है